मुहम्मद-बिन-तुगलक

- 31st Lecture by

Mamta Rani
History Depart.
SNSRKS COLLEGE
SAHARSA

08-05-2020

Scanned with CamScanner

मुहम्मद-बिन-तुगलक

→ दिल्ली सल्तनत के सुल्तानों में मुहम्मद-बिन-तुगलक सर्वाधिक विलक्षण व्यक्तित्व वाला शासक था। वह अरबी एवं फारसी का महान विद्वान तथा ज्ञान-विज्ञान की विभिन्न विधाओं जैसे-खगोल शास्त्र, दर्शन, गणित, चिकित्सा विज्ञान, तर्क विज्ञान, आदि में पारंगत था।

→ उसका नाम कई संज्ञाओं से जोड़ा गया। अंतर्विरोधों का विस्मयकारी मिश्रण रक्त का प्यासा अथवा परोपकारी आदि। इसके शासनकाल में 1333 ई० में अफ्रीकी यात्री इब्नबतूता भारत आया था। सुल्तान ने उसका खूब स्वागत किया तथा दिल्ली का काजी नियुक्त किया।

→ 1342 ई० में इब्नबतूता, सुल्तान के राजदूत की हैसियत से चीनी शासन तंगत तिमूर के दरबार में गया। इस यात्री ने मुहम्मद तुगलक के समय की घटनाओं का अपनी पुस्तक रेहला में उल्लेख किया है।

→ इब्नबतूता के अनुसार उस समय तुगलक साम्राज्य 23 प्रान्तों में बंटा हुआ था। कश्मीर एवं आधुनिक तमिलनाडु को छोड़कर लगभग सारा हिन्दुस्तान दिल्ली सल्तनत के नियंत्रण में था। राजनीतिक एवं प्रशासनिक योजनाएँ - बरनी सुल्तान की पांच मुख्य योजनाओं का विशेष रूप से उल्लेख करता है।

(a) दो आब क्षेत्र में कर वृद्धि
(b) देवगिरि को राजधानी बनाना
(c) सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन
(d) खुरासान पर आक्रमण
(e) कराचिल एवं खुरासान अभियान।

→ कुछ विद्वानों के अनुसार ट्रांसआक्सियाना के मंगोल शासक तरमशरीन (1327 ई०) के आक्रमण को रोकने में

Scanned with CamScanner

गालियों वाले पत्र भेजते थे।
बरनी के अनुसार चूंकि देवगिरि साम्राज्य के केन्द्र में स्थित था तथासभी दिशाओं में एक जैसी दूरी थी अतः इसे नई राजधानी के लिए चुना गया। देवगिरि ~~को दौलताबाद नाम दिया गया~~
मुस्लिम संस्कृति का केन्द्र था। इसी स्थान पर बहमनी राज्य का विकास हुआ। देवगिरि को कुबतुल इस्लाम भी कहा गया।

(c) सांकेतिक मुद्रा का प्रचलन :-(1330 ई०)

अत्यधिक विशाल सेना रखने के उद्देश्य से किया था क्योंकि लगातार दूसरे राज्यों को जीतने की सुल्तान की योजना, साथ ही उदारता, दानशीलता जो सुल्तान के स्वभाव का हिस्सा बन चुकी थी के कारण राजकोष रिक्त हो गया था। उसने तांबे तथा इससे मिश्रित कांसे के सिक्के जारी किये।

बरनी के कथनानुसार खजाने में धन की कमी और साम्राज्य विस्तार की नीति को कार्यरूप मे परिणत करने के कारण मुहम्मद बिन तुगलक को सांकेतिक मुद्रा चलानी पड़ी। मुहम्मद ने अपने पूर्ववर्ती चीन के मंगोल शासक कुबलै खां द्वारा चलाये गये कागज के सिक्के तथा फारस के शासक गैखातू द्वारा इसी तरह के एक प्रयोग से उत्साहित होकर सांकेतिक मुद्रा जारी करने को तैयार हुआ।

सांकेतिक मुद्रा का अर्थ था- चांदी के टंके के स्थानपर कांसे के टंके का प्रचलन। कांसे के टंके का मूल्य चांदी के टंके समतुल्य रखा गया। आधुनिक इतिहासकारों के अनुसार अन्तर्राष्ट्रीय बाजारों मे चांदी के अभाव के कारण इसका मूल्य बढ़ गया जिससे लोगों ने इसका भंडारण शुरू कर दिया।

Scanned with CamScanner

(d) खुरासान पर आक्रमण →

खुरासान अभियान तरमाशरीन के साथ मैत्री का परिणाम था। कहा जाता है कि त्रिमैत्री संगठन भी खुरासान के सुल्तान अबू सैय्यद के विरुद्ध बनाया गया था। किन्तु जब सुल्तान की सेना तैयार हुई तो ट्रांस आक्सियाना में राजनीतिक परिवर्तन होने के कारण तरमाशरीन को शासक पद से हटा दिया गया। इस प्रकार यह अभियान कभी भी प्रारंभ न हो सका।

(e) कराचिल अभियान :-

बरनी के अनुसार इस सैनिक अभियान के लिए तीन लाख सत्तर हजार सैनिकों की विशाल सेना खड़ी की गई। सैनिकों को पूरे 1 वर्ष का अग्रिम वेतन प्रदान किया गया। कराचिल का सैनिक अभियान सुल्तान की अगली विजय योजना थी किन्तु इसका विनाशकारी अन्त हुआ।

- कराचिल की तुलना हिमालय प्रदेश में कांगड़ा के पर्वतीय प्रदेश के साथ की गई है। तिब्बत की सर्दी और बर्फीले तूफान में सुल्तान की लगभग सम्पूर्ण सेना मारी गई जो सैनिक इस प्राकृतिक आपदाओं से बच गये वे भूख से मारे गये।

सुल्तान की पहली असफल योजना राजधानी में परिवर्तन तथा अंतिम ~~सफल~~ योजना दोआब में कर वृद्धि थी।

=x=

Scanned with CamScanner

सुल्तान विफल रहा। अंत उसे धन देकर वापस आना। सुल्तान ने कुछ मंगोल अफसरों को नौकरियाँ दी तथा तरमाशरीन से मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किया।

(a) दो आब क्षेत्र में कर वृद्धि →

दो आब क्षेत्र के कर वृद्धि की योजना को सुल्तान ने अपने शासनकाल के अंतिम दिनों में क्रियान्वित किया था। संभवतः दोआब में लगान वृद्धि को इस कारण लागू किया गया था क्योंकि यह सल्तनत का सर्वाधिक उपजाऊ क्षेत्र था।

दो आब में करवृद्धि लगभग 1/10 से के बीच थी। उपज का 50% लगान के रूप में तय किया गया। किन्तु दुर्भाग्य से जिस वर्ष वृद्धि हुई उसी वर्ष अकाल और तदुपरांत प्लेग की महामारी फैल गई।

इस संकटापन्न स्थिति में सुल्तान ने कृषकों को सहायता प्रदान करने के लिए केन्द्र में कृषि विभाग की स्थापना की. अकाल राहत संहिता तैयार करवायी. सिंचाई के लिए सैकड़ों कुएं. खुदवाये तथा अकाल ग्रस्त कृषकों को कृषि ऋण प्रदान की गई। सुल्तान की पहली असफल योजना राजधानी

(b) देवगिरि को राजधानी बनाना :-

सुल्तान की सर्वाधिक विवादास्पद योजना दिल्ली से देवगिरि राजधानी परिवर्तन था। 1327 ई० में राजधानी परिवर्तन से पूर्व देवगिरि को दौलताबाद नाम दिया गया। इसामी लिखता है कि सुल्तान खूनी एवं सुल्तान रक्त पिपासु था वह दिल्ली वासियों को दण्डित करना चाहता था, क्योंकि वे लोग सुल्तान के मरने में

Scanned with CamScanner